एपिसोड - 48

कचरे के प्रबंधन का पर्यावरण अनुकूल तरीका

(इन दिनों समाज पर कचरा प्रबंधन का बहुत दबाव है... ये एपिसोड इसी पर केंद्रित है... शुरुआत होती है एक ट्रैफिक के सीन से जिसकी वजह है वहां हो रहा विरोध प्रदर्शन... इसके बाद कहानी आगे बढ़ती है और बातों ही बातों में कचरा प्रबंधन के स्थायी तरीकों पर चर्चा की जाएगी... पूरे एपिसोड में कचरा कम करने और उसे दोबारा इस्तेमाल करने लायक बनाने पर ज़ोर दिया जाएगा)

किरदार :
ड्राइवर 1/ड्राइवर 2/ड्राइवर 3/यात्री 1/यात्री 2/यात्री 3/पुलिस (घोषणा करते हुए)
तरुण/वरुण/सुरामा (विरोध प्रदर्शन कर रहे गांव के लोग)
राकेश (गांव का स्कूल टीचर)
फारुख/मधुरा/नागेश (सेमिनार में हिस्सा लेने वाले वैज्ञानिक)

(गाड़ियों की लम्बी कतार जहां एक भी गाड़ी आगे नहीं बढ़ रही है... गाड़ियों के हॉर्न का शोर और ड्राइवर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे हैं...अनुचित भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं)

ड्राइवर 1- क्या हो रहा है ये ? हम यहां ऐसे क्यों खड़े हैं और कब तक खड़े रहेंगे ?

ड्राइवर 2 - इस अव्यवस्था के लिए आखिर कौन ज़िम्मेदार है ?

ड्राइवर 3 - उसे सड़क से बाहर फेंक दो...जिसकी वजह से ये जाम लगा हुआ है।

(यात्री फिर धीमी आवाज़ में बातचीत करने लगते हैं)

यात्री 1 - पता नहीं मैं कब तक घर पहुंच पाऊंगा। पूरा परिवार मेरा इंतज़ार कर रहा है। जब तक मैं नहीं पहुंचूंगा, पंडित जी पूजा शुरु नहीं करेंगे।

यात्री 2 - मेरी मां बहुत बीमार है। मैं बस उनसे ही मिलने जा रहा था.. उन्हें अस्पताल में भर्ती जो कराना है। लेकिन यहां तो... बुरा हाल है... पता नहीं गाड़ी आगे कब बढ़ेगी ?

(लाउडस्पीकर पर पुलिस की घोषणा)

पुलिस - यहां के लोग सड़क पर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं...। हम लगातार उनसे बातचीत कर रहे हैं... हमारी कोशिश है कि वो हमारा प्रस्ताव मान लें और रास्ता रोको आंदोलन बंद कर दें। लेकिन उन्होंने हमारा प्रस्ताव मानने से इनकार कर दिया है। हम कोई समयसीमा तो नहीं बता सकते कि ये प्रदर्शन कब तक खत्म होगा... पर आप लोग कृपया धैर्य रखें।

(यात्री फिर धीमी आवाज़ में बातचीत करने लगते हैं)

यात्री 3 - मेरे दोस्त ने मुझे फोन पर बताया कि इन लोगों ने रेल यातायात भी प्रभावित किया है।

यात्री 2 - अजीब बात है… पता नहीं किस वजह से इन लोगों ने आम लोगों का जीना मुहाल कर दिया है… भगवान जाने क्या हुआ है।

यात्री 3 - मेरे दोस्त ने मुझे बताया है कि यहां एक बड़ा सा कचराघर है… यहां से एक किलोमीटर दूर होगा। स्थानीय़ प्रशासन ने उसी के बगल में एक और कचराघर खोलने की कोशिश में है… इलाके के आस-पास रहने वाले लोग इस फैसले का विरोध कर रहे हैं।

बच्चा - *(**यात्री** 2 से)* ये कचराघर क्या होता है पापा ?

यात्री 2 - (सवाल पर ध्यान न देते हुए) लेकिन हम इनकी सनक के शिकार क्यों बनें ?

बच्चा - (सवाल दोहराते हुए) कचराघर क्या होता है पापा ? बताइए न…

यात्री 2 - श्याम, कचराघर वो जगह होती है जहां कचरा फेंका जाता है। अलग-अलग जगहों से कचरा इकट्ठा किया जाता है और सारा कचरा यहीं डाला जाता है।

बच्चा - कचरा क्या होता है पापा ?

यात्री 1 - उफ्फ्फ… अपनी सवालों की पोटली बंद करो अभी। तुम गाड़ी से बाहर क्यों निकले… वापस जाओ… गाड़ी में बैठो।

यात्री 3 - अरे…क्यों डांट रहे हो…बच्चा ही तो है। उसका सवाल पूछना तो स्वाभाविक है। मेरे बच्चे…कचरा वो होता है जो काम का नहीं होता है… वो चीज़ें जो हमारे काम की नहीं होती है… वो हम फेंक देते हैं… जैसे कि खाली बोतलें, सब्जियों के छिलके… ऐसी चीज़ें…

बच्चा - मैंने कल ही अपनी टूटी हुई ट्रेन फेंक दी… तो क्या वो भी वो भी कचरा है ?

यात्री 3 - हां, बेटा बिल्कुल… अब चलो गाड़ी में जाकर बैठो… आपकी मम्मी चिंता कर रही होगी… चलो जाओ…

(माइक पर पुलिस द्वारा सूचना दी जाती है)

पुलिस - सड़क खोल दी गई है… लेकिन हमें यातायात को पूरी तरह खोलने में वक्त लगेगा… हम स्थिति को पूरी तरह ठीक करने में लगे हैं… आप धीरे-धीरे आगे बढ़े… और हां ओवरटेक करने की कोशिश मत कीजिएगा… हालात सुधारने में हमारी मदद करें…

(सारे यात्री राहत की सांस लेते हैं और हालात सुधरने से खुश होते हैं)

यात्री 1 - अब राहत मिली… चलो अब जल्दी से निकलते हैं… क्या जाने कब हालात फिर से बिगड़ जाएं…

यात्री 3 - बिल्कुल सही… चलो जल्दी निकलते हैं…

(गाड़ियां धीरे-धीरे आगे बढ़ती हैं… और जाम साफ होता जाता है)

(वाद्य संगीत)

(रात का समय… क्रिकेट खेलने की आवाज़ सुनी जा सकती है… कुछ लोग इकट्ठा खड़े होकर बात कर रहे हैं)

तरुण - आज का बंद काफी सफल रहा… लेकिन क्या इससे कल कुछ बदलेगा ?

सुरामा - हां… मेरा भी यही सवाल है। क्या अधिकारी हमारी बात सुनेंगे ? क्या वो एक और कचराघर बनाने का इरादा बदलेंगे ?

वरुण - आपको क्या लगता है सर ? क्या हम कुछ गलत कर रहे हैं ? क्या हमें ऐसा एक और बंद करना चाहिए ?

सुरामा - क्या ये कानूनी तौर पर ठीक होगा ?

राकेश - मैं तुम्हारी चिंता समझ सकता हूं। हम किसी निजी फायदे के लिए ये आंदोलन नहीं कर रहे हैं। कचरा प्रबंधन का मुद्दा हमारी सेहत और हमारे जीवन से जुड़ा है।

वरुण - और हमारी आजीविका… हमारे रोज़गार से भी।

राकेश - बिल्कुल… तो ये हमारा सत्याग्रह है जो हम, ज़मीन को लेकर बने कानून की सीमा के अंदर रहते हुए कर रहे हैं… हमने आज जो भी किया वो सांकेतिक था… हमने प्रशासन को पहले ही हमारी चिंता के बारे में लिखा था और हमें विश्वास है कि वो हमारी स्थिति को समझेंगे…।

सुरामा - आपका मतलब है कि आज का बंद सिर्फ उनका ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिए था ?

राकेश - हां, बिल्कुल… यहां से लोगों को आवाजाही में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए… और इसे सुनिश्चित करना ज़रूरी भी है… लेकिन हमें अपने स्वस्थ जीवन के बारे में सोचने का भी अधिकार है।

तरुण - सर, मैंने कभी नहीं सुना कि कचरा प्रबंधन को लेकर कोई आंदोलन या किसी तरह का बंद या धरना प्रदर्शन किया गया हो। क्या हम ऐसा करने वाला पहला समूह हैं ?

राकेश - इसलिए मैं तुम लोगों से कहता हूं कि अखबार ज़रूर पढ़ा करो… ऐसा नहीं है कि सिर्फ हम गांववाले

ही कचरा प्रबंधन को लेकर आंदोलन कर रहे हैं। शहरों को देखो... वहां पर रहने वाले लोग भी इस तरह की समस्या से जूझ रहे हैं...।

तरुण - सचमुच... ऐसा है क्या ?

राकेश - हां, बैंगलुरु को ही ले लो... इतना सुंदर शहर है और सूचना प्रोद्योगिकी के मामले में देश का प्रमुख केंद्र भी है।

सुरामा - वहां क्या हुआ था ?

राकेश - हाल ही में ऐसी ख़बरें थी कि वहां ऊंची ऊंची इमारतों में रहने वाले लोगों ने भी आंदोलन किया था। वो भी सड़क पर उतर आए थे... उनकी समस्या भी यही थी...कि वहां कचरा फेंकने की ठीक व्यवस्था नहीं थी।

वरुण - मैंने टीवी पर देखा था कि वहां किसी तालाब को लेकर कुछ सख्त नियम हैं।

राकेश - मुझे खुशी है कि तुमने ये मुद्दा उठाया। उस तालाब का नाम है बेलन्दुर...और नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने इस तालाब के रख-रखाव को लेकर नागरिक एजेंसियों पर चाबुक चलाया है। और तो और कर्नाटक राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने सत्तान्वे कारखानों को बंद करने का नोटिस जारी किया है।

सुरामा - ये बहुत बड़ा कदम है। इसका मतलब है कि हम अकेले नहीं हैं।

राकेश - बिल्कुल नहीं।

वरुण - कचराघर नुकसान तो पहुंचा ही रहे हैं... जैसा कि हमारे साथ हो रहा है।

राकेश - हां, ये कचराघर हमारे लिए ख़तरा बनते जा रहे हैं। पूर्वी मुंबई के देवनार मैदान भी कचराघर बना हुआ है...उसके बारे में सोचो। तीन सौ छब्बीस (326) एकड़ में फैले इस मैदान में कूड़े के तीस (30) मीटर ऊंचे पहाड़ बने हुए हैं। समझ रहे हो... तीस मीटर ऊंचे पहाड़ मतलब नौ मंज़िला इमारत के बराबर... ये पूर्वी मुंबई के तीन सबसे बड़े कचराघरों में से एक है... जहां हर दिन पांच हज़ार पांच सौ (5,500) मेट्रिक टन कचरा फेंका जाता है।

वरुण - अच्छा... लेकिन आप इस बात पर खास ज़ोर क्यों दे रहे हैं ?

राकेश - क्योंकि 2016 में इस कूड़ेदान में आग लग गई थी और अगले कुछ दिनों तक उस इलाके में रहने वाले लोगों के जीवन में मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था।

सुराना - ये काफी भयानक है।

राकेश - आग लगने की वजह से पूरे इलाके में इतना धुआं फैल गया था कि बच्चों की सेहत को ध्यान में

रखते हुए बृहनमुंहई नगर निगम को अपने चौहत्तर (74) स्कूलों को बंद करना पड़ा था। अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने जो सैटेलाइट तस्वीरें ली थी… उनमें भी वो धुआं साफ देखा जा सकता था।

तरुण - क्या सिर्फ हमारे देश में ही इतने बड़े-बड़े कचराघर हैं ?

राकेश - बिल्कुल नहीं… विकसित देशों में भी कचराघर एक बड़ी समस्या है। कचराघर की वजह से हमेशा ही हवा और पानी में ज़हर मिलने का ख़तरा बना रहा है।

वरुण - सचमुच… विकसित देशों में भी ये समस्या है।

राकेश - खतरों की सूची अभी खत्म नहीं हुई है। ग्लोबल वॉर्मिंग के बारे में सोचो। ये कचराघर ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण भी होते हैं। एक आंकड़ा मुझे याद आ रहा है। 2008 में अमेरिकी कचराघरों ने तीस (30) मेट्रिक टन ज़हरीली मीथेन गैस छोड़ी थी। हर वैज्ञानिक इसके असर का आंकलन कर सकता है कि इस तरह के ग्रीनहाउस गैस अगर वातावरण में फैल जाएं तो क्या होगा ?

तरुण - कितने सारे उदाहरण हैं… इस तरह खुले में कचरा फेंकने और रिहायशी इलाकों में कचराघर बनाने से नुकसान हो रहा है। फिर भी लोग सुन नहीं रहे हैं… कुछ समझ नहीं रहे हैं।

सुरामा - मेरी बात सुनिए सर… मान लेते हैं कि सारे कचराघर गायब हो गए… यानी अब कोई कचराघर नहीं है… कहीं भी नहीं है… ठीक है। लेकिन कचरा तो होगा ही… तो फिर आखिर ये कचरा जाएगा कहां ?

वरुण - ये हमें सोचने की ज़रूरत नहीं है। हमें बस इस बात का ध्यान रखना है कि हम दूसरों के कूड़े की वजह से अपनी जान नहीं देंगे।
राकेश - रुको वरुण… धैर्य रखो… सुरामा ने एक वाजिब सवाल पूछा है। उससे उत्तेजित होने की ज़रूरत नहीं है।

वरुण - लेकिन हम ऐसे सवालों से खुद को क्यों परेशान करें ? हम कोई देश या राज्य नहीं चला रहे हैं। ये तो हमारे नेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों को सोचना चाहिए… इस पर ध्यान देना चाहिए।

राकेश - मुझे ऐसा नहीं लगता… तुम्हारी सोच गलत दिशा में जा रही है… किसी भी समस्या का सबसे अच्छा समाधान तभी निकल सकता है जब उसका उपाय ज़मीनी स्तर पर ढूंढ़ा जाए… मतलब जब आम लोग इस समस्या से निपटने की कोशिश करेंगे तभी इस समस्या का समाधान निकलेगा… क्यों तरुण ?

तरुण - मैं आपकी बात पर अमल करने के बारे में सोच रहा हूं लेकिन मुझे कोई रास्ता नहीं नज़र आ रहा है। जब भी मैं शहर में जाता हूं तो मुझे हर तरफ कचरा ही कचरा नज़र आता है। मुझे तो ऐसा लग रहा है कि कचरा लगातार बढ़ता ही जा रहा है।

सुरामा - तरुण गलत नहीं कह रहा है। हमारे गांव की सड़कों पर भी हर वक्त कचरा फैला रहता है। यहां दुकानें इतनी ज़्यादा नहीं हैं। लेकिन कचरा लगातार बढ़ता ही जा रहा है… वो भी बहुत ही ज़्यादा… पता नहीं

कैसे ?

राकेश - इसमें कोई शक नहीं है कि कचरा प्रबंधन का सबसे अच्छा तरीका है कि हम कम से कम कचरा पैदा करें। लेकिन अफसोस कि हमारे आस-पास इस तरह का चलन नहीं है। बल्कि ये तो जनसंख्या बढ़ने से भी ज़्यादा तेज़ी से बढ़ रहा है।

सुरामा - इसलिए तो मैं कचराघरों का विकल्प ढूंढ़ रहा हूं।

राकेश - विकल्प आसान है…. इसमें 3 R का आवश्यकता होगी… पहला R है Reduce… यानी कचरा कम करना, दूसरा R है Reuse यानी कचरे को दोबारा इस्तेमाल करना, और तीसरा R है Recycle यानी कचरे को काम की चीज़ में बदलना… लेकिन इससे भी तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं मिलेगा… मैं तुम्हें एक सेमिनार के बारे में बताता हूं… जहां पिछले महीने मैं अपने छात्रों को ले गया था। वहां हमने कचरा प्रबंधन को लेकर एक परिचर्चा सुनी थी।

(संगीत तेज़ होता है और फिर मध्यम होते हुए बंद हो जाता है और डायलॉग शुरु होते हैं)

फारुख - नागेश जी… आपकी व्याख्या से हमें बहुत सारी जानकारियां मिली… लेकिन क्या आपको लगता है कि जो सुझाव आपने दिए हैं उनसे फायदा होगा ?

नागेश - फारुख साहब… ये मेरे तरीके नहीं हैं… ये अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण एजेंसी यानी ईपीए के सुझाव हैं… क्या मैं इन्हें दोहराऊं…

फारुख - जी ज़रूर…

नागेश - ईपीए को सारे कचराघरों के लिए लीचेट संग्रह प्रणाली का इस्तेमाल करना चाहिए। लीचेट का इस्तेमाल ठोस अवशेष को तेज़ी से सड़ाता है।

मधुरा - मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता है… क्या आप इस पर और रौशनी डालेंगे…

नागेश - लीचेट एक तरल पदार्थ होता है जो बारिश और कचरे के प्राकृतिक रूप से सड़ने से बनता है। लीचेट संग्रह प्रणाली के तहत इस तरल पदार्थ को इकठ्ठा किया जाता है।

मधुरा - अच्छा… इस पद्धति के घटक क्या हैं ?

नागेश - लीचेट संग्रह प्रणाली में कम से कम दो प्रतिशत की ढलान देकर तरल पदार्थ को एक हौदी तक पहुंचाया जाता है।हौदी में एक HDPE riser और submersible pump लगा होता है। इस व्यवस्था में लीचेट तरल पदार्थ को लीचेट संग्रह प्रणाली तक पहुंचाया जाता है फिर वहां से उसे केंद्रीय संग्रह पंप तक भेजा जाता है और फिर वहां से उसे तालाब तक पहुंचाया जाता है।

मधुरा - ये तो बहुत ही विस्तृत पद्धति है। इसकी संरचना के लिए बहुत सारे पैसे लगाने पड़ेंगे।

नागेश - ठीक बात है... लेकिन अगर हम आम लोगों की सेहत के बारे में चिंतित हैं तो निवेश तो करना ही पड़ेगा।

फारुख - आप मीथेन गैस के सकारात्मक इस्तेमाल की बात कर रहे थे।

नागेश - हां, ये भी बहुत अच्छा तरीका है। अपघटन के दौरान मीथेन गैस को बिजली पैदा करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कैलिफोर्निया में योलो शहर के कचराघर से एक दिन में चौदह लाख क्यूबिक फीट मीथेन गैस पैदा होती है जिसका इस्तेमाल बिजली पैदा करने में किया जाता है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस प्रक्रिया का फायदा हम भी उठा सकेंगे।

मधुरा - क्या आप मुझे ये भी बताएंगे कि कचराघर खनन क्या होता है ? मैंने एक बार इसके बारे में सुना था लेकिन ठीक से समझ नहीं पाया...।

नागेश - कचराघर खनन का मतलब है कचरे से काम की चीज़ निकालना जिसका इस्तेमाल दूसरे कामों में किया जा सके। कचराघर की पैंसठ फीसदी से ज़्यादा गंदगी इस्तेमाल में लाई जा सकती है। और तो और कचराघर को बंद करने से पहले वहां मौजूद और चीज़ें जैसे धातु, लकड़ी, एलुमिनियम, कांच, प्लास्टिक, वगैरह को भी दूसरे कामों में इस्तेमाल के लिए निकाला जा सकता है।

फारुख - तुमने तो कचरे को जलाने के सारे विकल्प सिरे से नकार दिए हैं।

नागेश - आप अपने शब्द मेरे मुंह में डालने की कोशिश मत कीजिए। मैं कचरे को जलाने के विकल्प को खारिज नहीं कर रहा हूं... लेकिन हम जानते हैं कि ऐसा करने से बहुत सारी और समस्याएं भी होती हैं। इसलिए मैं इस विकल्प का सुझाव नहीं दे रहा हूं। आपको ऐसे फैसले सोच-समझकर लेने चाहिए।

मधुरा - मुझे तो कचरे को जलाने की बात ठीक से समझ में ही नहीं आ रही है। मैं इतना तो समझ गया कि पूरे कचरे को जलाने के बजाय उसमें से ज़रूरी और काम की चीज़ें अलग करने के बाद जलाना चाहिए। लेकिन मैं इसके बारे में और जानना चाहता हूं।

नागेश - ठीक है... कचरे को जलाना इसके प्रबंधन का एक तरीका है जिसमें हम कचरे को जलाते तो हैं लेकिन उससे ऊर्जा बनाने के लिए... कचरे से ऊर्जा बनाने की तमाम तकनीकों में कचरे को जलाकर उससे ऊर्जा बनाने का तरीका सबसे ज़्यादा कारगर है। दूसरे तरीके भी हैं जैसे गैसीकरण, अवायवीय पाचन (anaerobic digestion) और Pyrolysis. कचरे को हमेशा ऊर्जा पैदा करने के लिए ही नहीं जलाया जाता है...

मधुरा - तो फिर लोग कचरा जलाने पर एतराज़ क्यों करते हैं ?

फारुख - मैं यहां कुछ तथ्य सामने रखना चाहता हूं।

मधुरा - जी ज़रूर

फारुख - पुराने ज़माने में कचरे से ज़रूरी तत्व निकाले बिना ही उसे जला दिया जाता था… जिससे पर्यावरण को बहुत नुकसान होता था। ज़रूरी तत्व अलग किए बिना जलया गया कचरा और भी हानिकारक होता है। इसकी वजह से लोग, उनकी सेहत और पर्यावरण को खतरा बढ़ जाता है। ऐसे तमाम कारखानों और जलाने की इस विधि से बिजली पैदा नहीं होती है।

नागेश - जलाने से कचरे का घन कम से पन्चान्वे से छियान्वे प्रतिशत (95%-96%) तक कम हो जाता है। वैसे ये बात कचरे में मौजूद तत्व और उनको इस्तेमाल के लायक बनाने के तरीके पर निर्भर करती है। यानी कचरे को जलाने से कचराघर बनाने की ज़रूरत तो खत्म नहीं होती है लेकिन उसमें फेंके जाने वाले कचरे की मात्रा ज़रूर कम हो जाती है।

मधुरा - *(हंसते हुए)* तो घूम-फिर कर हम फिर कचराघर की समस्या पर ही आ गए।

फारुख - मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई है।

मधुरा - ओह… तो आप अपनी बात पूरी कीजिए…

फारुख - कचरे को जलाने के फायदे भी बहुत हैं… खास तौर पर दवाइयों के अवशेष जलाने के फायदे… इस प्रक्रिया में जब कचरे को ज़्यादा तापमान पर रखा जाता है तो उसके विषैले तत्व बर्बाद हो जाते हैं।

नागेश - जापान में इस विधि का खूब इस्तेमाल होता है। वहां ज़मीन कम है न इसलिए।

मधुरा - काफी तर्कसंगत बात है ये तो।

नागेश - कचरे को जलाने से पैदा होने वाली ऊर्जा की डेनमार्क और स्वीडन जैसे देशों में बहुत मांग है।

मधुरा - इसलिए कचरे को जलाना गलत नहीं है। लेकिन इससे कचराघर की ज़रूरत खत्म नहीं होती है।

नागेश - *(हंसते हुए)* बिल्कुल ठीक समझे तुम…

(गांव का सीन, संगीत के साथ वापस आता है)

सुरामा - तो कचराघर हमेशा रहेंगे… हमें उनसे कोई नहीं बचा सकता है।

तरुण - ऐसा ही लगता है।

राकेश - लेकिन हम कचराघर को और बेहतर बना सकते हैं। इसमें कोई शक नहीं है। वैसे भी, बड़े-बड़े मैदानों को कचराघर बनाने का कोई औचित्य नहीं है। प्रशासन को और ज़्यादा सतर्क रहना होगा।

वरुण - मैं कभी-कभी सोचता हूं कि अगर हम कचरे को अपने ग्रह से ही दूर ले जा पाते… मतलब अंतरिक्ष

में... क्या ऐसा मुमकिन है ?

राकेश - वैसे आइडिया अच्छा है। लेकिन इसमें दो समस्याएं हैं... एक तो हमलोग बहुत ज़्यादा कचरा पैदा करते हैं... और दूसरा रॉकेट लॉन्च करना महंगा सौदा है...

वरुण - *(हंसते हुए)* तो इससे भी कोई फायदा नहीं होगा...।

राकेश - अगर रॉकेट बनाने वाले इंजीनियर इस पर खर्च होने वाली रकम को दस गुना कम कर दें तो भी कचरे को अंतरिक्ष में फेंकने पर हज़ारों डॉलर का खर्च आएगा...

सुरामा - इस तरह के ख्याली तरीकों पर बात करना बेकार है। हमें ज़मीनी हकीकत को ध्यान में रखते हुए समस्या का समाधान ढूंढ़ना चाहिए।

वरुण - इसका मतलब है बस एक ही रास्ता - कचरा कम से कम पैदा किया जाए।

सुरामा - हम इस्तेमाल की हुई चीज़ को दोबारा इस्तेमाल करने के बारे में कितना सुनते हैं... पढ़ते हैं... क्या इससे कोई मदद मिलेगी। या हम इसमें भी अपने आलस्य की वजह से पिछड़ गए हैं।

राकेश - इससे बहुत मदद मिलेगी... जैसे कागज़ को ही ले लो... इस्तेमाल किए हुए कागज़ से नया कागज़ बनाया जाए तो ये कच्चे माल से बने कागज़ के मुकाबले, कम से कम तिहत्तर (73) फीसदी कम वायु प्रदूषण फैलाता है।

तरुण - सचमुच ?

राकेश - और सुनो... जैसे एक इस्तेमाल की हुई बोतल से अगर नई बोतल तैयार की जाए तो जो ऊर्जा बचेगी उससे करीब तीन घंटे तक एक बल्ब जलाया जा सकता है।

वरुण - काफी दिलचस्प है ये तो।

राकेश - और सुनो... एक टूटी हुई कांच की बोतल से अगर नई कांच की बोतल बनाई जाए तो उससे बचने वाली ऊर्जा से कम से कम पच्चीस (25) मिनट तक कंप्यूटर चलाया जा सकता है।

तरुण - तो फिर हम हर चीज़ के साथ ऐसा ही क्यों नहीं करते हैं ?

राकेश - असल में होना तो यही चाहिए। लेकिन इस बात पर लगातार बहस चल रही है कि क्या इस विकल्प पर हो रहा खर्चा इससे होने वाले फायदे से ज़्यादा होगा या कम होगा ?

सुरामा - तो फैसला क्या हुआ ?

राकेश - फैसला अब भी इस्तेमाल की गई चीज़ों से नई चीज़ें बनाने के पक्ष में ही है। लेकिन इससे बेहतर एक

और तरीका भी है।

तरुण - मुझे लगा था कि यही तरीका है बस…

राकेश - नहीं, ऐसा नहीं है… इस्तेमाल की गई चीज़ों से नई चीज़ें बनाने के बजाय उसी चीज़ को दोबारा इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए। इसकी शुरुआत होनी चाहिए बनाने से… हम ऐसे डिब्बे और बोतल बनाएं जो बार-बार इस्तेमाल किए जा सके। बार-बार इस्तेमाल होने वाली चीज़ बनाने पर जो खर्चा आएगा वो उसे साफ करने के लिए इस्तेमाल होने वाले साबुन और पानी के बराबर होगा… न कि उसे चुनने, पिघलाने और दोबारा उसी सांचे में ढालने पर होने वाले खर्चे के जितना।

सुरामा - वो तो हम अब भी कर रहे हैं सर… इसमें अनोखा क्या है ?

राकेश - कुछ भी नहीं… लेकिन हमें ये अच्छी आदत हर किसी को सिखानी होगी… खास तौर पर उन लोगों को जो एक बार इस्तेमाल करने के बाद चीज़ों को कचरे के डिब्बे में फेंक देते हैं।

सुरामा - तो ये है कचरा कम करने का सबसे बेहतरीन तरीका…

राकेश - और कचराघरों की संख्या कम करने का सबसे प्रभावी तरीका भी।

सुरामा - अब बहुत देर हो रही है… चलो सो जाते हैं… कल से ये अच्छी आदत लोगों को सिखाने और उन तक ये ज़रूरी जानकारी पहुंचाने की मुहिम शुरु करेंगे।

(सब हंसने लगते हैं… संगीत धीरे-धीरे खत्म हो जाता है)